PRINTED BOOK

यूहर्त चित्र। माली

THE VEDIC PATH

Quarterly Journal of Vedic, Indological and Scientific Research
Gurukula Kangri Vishwavidyalaya,
HARDWAR

To.

If not delivered, please return to:
Dr. R. L. Varshney

Editor, Vedic Path
'Dreamland'
P. O. Gurukula Kangri-249 404

HARDWAR, U. P., INDIA.

रवजनगरीरीनिन्यताहाउपवयाजनने किन्ने ---ने अधिरेते प्रेमी ते भारति हैं जर्र ते से साल पार आसे का में कि ने तो हैं सामाने प्रेमें प्रेम साल प्रेमिय के प्रेमिया के प्रेमिया के प्रेमिया के स्ट्रिया के स्ट्रिय के स्ट्रिया के स्ट्रिय के स्ट्रिय के स्ट्रिया के स्ट्रिय के स्ट्रिय धस्त्रानितः दिनानितिषिक्षणाई। सुताधिमासकतिक त्रहराई पानेविकास्वानवारिक द्रशापरिधार पंजापस्त्री पर्वह गंजातिगंड जो । जाद्याने नवना राष्ट्रिक ग सर्वेष्ट्रमें से १९ में हो ४ माह छ द नवार के १२ द १४ व हारे छ नियो त्यानेत बल्बेर करमनु १४ ते लिंग १५१० १ कारोप मारी। प मंग्रभा ३६। इतिकः कालबेलानं यम प्रेरम् केरकः प्रमार CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

2 Concess

व्यवस्थानिस्त्रात्त्र व्यवस्थानिस्त्र । की हुँ सी मं व इम्मो अड्डिक दुएएं व E168 RIG 313 हाने में देखां हतीय हवासी हरें भागे g18 A16. 图 निक्ये : ४३। पंद १६३१६ ७ होते ४ हरता P भागा नादिछाड़ों शरां पविष्टें शत्यं में संदेश 121 90 68 g सहरामार्ड्या किया निया मार्गित मार्गिय में ब्राह्म 18 3 13 अवंग्रमकर प्रवेतया समरे विष्टि सि व्य पराइ नार मार्ग्डिह वमहोद 93 CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

दि हो रक्षण को हे पुरो की ने करते हातां ।। तुर्रा । सर्वे कह ह स्वरं । ना विश्व ने ना शिक्षा सिरवर ह अंतर्गर कीर की रही शा व वर्ष रंगा रिक्षिति के ते हार कि ते कि हिंदिया । सो में लाष्ट्रीहरू में ने देप प्रमानिक हिल्ला है। यह महिल्ला का महिला महि वनागा-दिका । भवग दिवा करमें मिता छ। दुक्तिका किता के कालवेला सुराईका शयमधंरगताः कला १६का ।। ३८। विषामी स्वतीती हे कत स्वा श्र विषक्ष विषा हारियुने नेक हो जिसा प्राव्हिमा करें।। ए। सिन के के ने हार ही निहीश सी माना ने प्राप्ती सर्वानेयामणा प्रेविनिहितान्।।४१॥ कालोगेस्योगोषि वेस्पान्शनीमयोगितिह सेष CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation US

अहर्ति वि गोहोत्तरतिश्रयावत्। भगगीरणीयाज्यतदेवहोकोन्नां यत्रहेशेत्वतेवं मेके। प्रश्चेताहेको क्रिके विक्रिके क्रिके विक्रिके क्रिके क्रि यः मुसेनुष्पाणो र तो। सार देशे। सरभेति वाक्रणो ने प्रविशिष्ठ के ते विक्रते। सह विन लाइर हमिति दितः मुशेषुरे बा सुर निम्ह्यां तरे । पराषादेनि स्वाचर सर्व यो तने व नेपुता ३५ मालिकाभवीहिनर्ता अमधिकालिहिनरे वे वर्ते स्तिनिका के हिन प्रवेशन प्र अराहेशिकाहिंगा कालपह छेजवानिताः सेकाल अति। कालहोशः सिहिन्दा

त्रीनासप्तर् त्र प्रति पने। ४६। हीका मो जिल्लाह ने उने मर बहे बती चे किया में ना ना जिलाहे प्रतीन पति सह किनिक्रोगमे वात्मिस्मिमा जतीय्वतायोगेरां विष्टिति हे द्वारा लिएला की सितयोन्द्रिमानेत प्राथिक मिन्द्रिय नहा स्थानी वेद में निह करे निह करें निह करें णुर्काह् सेविया । इस्रोपिय से को कुसाह है तर त्यादिश को। ४ र । आ क्रापित तो नी वें अस्ति। सर्वकर्ष मुं जी बोशक गत स्मा स्मार स्मा हे को पूर्वी वाता ४ र । सिहें गुरे वित्र से वा बे वा हो ने हो जी में या किया CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

क्रिएति हिन्दु प्रमिष्ठ प्रदेशक न्यामार्वनकार हो वाहिकारा मनारिकाशाहर्वा अवसामामध्ये अर्थ महिन्द्रां स्वापा मनारिका अर्थ स्वापा मनारिका अर्थ स्वापा मनारिका स्वापा स्व या। अस्त्रिक्त रापरित ज्ञानम काणिला काला है के हिं। काले विजी मित्रहिंद में बेर्ग स यात्रक्री तो बर की जिस्त्र का की बिन्द का गो। भारत के क्रिमें तो ति सी हमी हम का की स्यातिकार असे।तम्मिनार वातोग्रभेताः वम्हमादिकार। स्तातिकार्यमध्ये हरवेभवेदे द्वा र्रिन्दित्रयोप्रवे तिया क्रिकेन करोनि लाहित लेहा विकानी हुए है से नेवति हैं वे विकास करोने का नेवति हैं के पा CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

जम्भिन्निषी १०११।। नेहें सेनिशिशास्त्रिषेन्वर स्वस्थाः ७ सहस्वित गा अन्दे तिया । सिते त्वा वे हर नमसं हिंहे युगा प्राप्ति ते गोर की वे विदेश १३ इमें अप्रमाद्याति ते एहा अनिष्ठी रेवज्ञानं तस्त्रत्य विश्वति ने हिती विताय विश्वति । अध्यत्र अवस्त्र अवस्त् भी जोतर मार् सदीकाः वित्रहो। अमें भर्यन १२ सवि १३ त्युष्टा १४ द्या १५ से कार्य के मात् । इस्ता भी १हरवल्याना १६ वित्रातिक है । इस्ति वित्रातिक व अवरणां ३६ दिर्वह प्रथि हा जा ३ मिला १।।। अतरा त्रय रोहि राजो भारत देश हैं है वो स्थित । त्र क्षिरं वीनगेत शास्त्रामादिसिर् में या स्वालगदिसे यु तेन्त्री ति वर् सार्व वले वर्गातासी १ अधिमारी मुख्य स्थानिक विकास मिल CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पालक्षीकामुद्रतिषिवकायाः अनेवारेघटनारो। एएसमते उत्तरेद्रम्द्रिच्चित्रचयभेष्यप्रभीदये पु हात है के दिवार वार्ष ते जा र वेंद्रा मुद्दे ति का १३ छान प्रमित के ति का कि भतिस्विक्षयः सित्तिको। गरैक्ति भोत्र छारित्ता विविष्ति। भित्रेष्ट्र सित्ते विविष्ति। भित्रेष्ट्र सित्ते विविष् लेखेरिकारिने प्रशक्ते। स्पर्वातिकाने त्येय हाले कार्य के जिस् देशियवरे जिहान

सर्वातिसामध्य ज्येषणाता नरास्त्रसर्षो चार्य वास्त्राची।। हणी वास्त्रारेतेच तस्रोहात्रीरा नाषीत्रा विवित्र वात्रा निर्देशिक्ष वाराही वस्त्रीयाणीत्र गुर्विता मलमहुअवस्वतग्नितितापारपातुषेशीतपर्गनेअत्वम्द्रित्रप्रवोगानव ग्टहाइडिनिस्म्यां १

विस्त्रतः स्वाहुरेयवरा मध्येष्ठस्य विस्त्रा स्वाहित्र प्रमा मिया अंदिन से नियश ते अयुक्ते व विन होति हुणेया ते व नो व्यति वशासिना के प्रव वारत कुपमद्यानोयात्व उष्णे द्रियः पापे ही नव ले स्तरी । स्रग्रे हो वास गोरवे विशे आणे सर्व हता क्ष्यस्परवनने अंभोनहीं सेर्भेलेनिनं हे बुदे बुदे लन्गी रेने तराकी मुनाव भारति के विवित्तितार्वे त्यवारे सी त्ये तन्त्रे के क्रे त्या त्या त्या वा के के क्या वा प्राप्त प्रमाणिक क्या नेवाकार्यास्वापिनः सेवके ना १६॥स्वास्मादित्यम्दिरिवण्यस्य का म्याये वरे लगेधमेर स्तापरः महिमस्तिद्वप्रयोगः मुन्नः। नीरेगार्थान्यम् महिनेद्द्रीकरेके रियत्रंद्रम् प्रमवेद्द्रताने वर्ष्ठारेये कर्विद्रम् । वर्ष्ट्रमान्यस्य वर्ष्ठावम्द्र सिन्ने विवादेषानिषा CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ित्रेयुभंसत्रेत्रीतीताला जिस्तेरिहेन्द्रेत्रेश जीयभंगति । द द्वारात नेसत्यक मेषादितितेने ने तन्त्रका सहितंबार इवर में दिसी देति को पूर्ण जयायीन बेग्रह भग जी किलाने मुन्ने स्थात्। अस्त्राणां ताल ने सह सुर विदे ने हत्वे काहित्य व निरिक्ता वर्ष प्रशिवित दिन दे र वित ते व का वित व संधायी के क्रमें सन्तरह यालास प्रमीविहिक्ते प्रकेत के ति वेच प्रवत्य सहिता है तेल द्रिश्वे॥स्त्रतिरेशिक्षाराचे रागितिष्ठभ दृ हे हुने। दे र्गे स्वारोगः राजासनारे प्र बसर लक्ष्र दे विकादित्वर हो। २१। अधारे बतु अधार में ते देशो स्वार्थित विकास विकास के स्वार्थित के स्वार यमालानिधं ३

रवनसारी नी ने जाता ता वच्च वच वच वच विष्य है का दूरी दशामरा गोल्य माने अपेषु ती ह है म्बर शकारिपलेहाधिपार्कवासवेरिः मुभारंतः गुरोपवये लग्ने गंग्रमहां प्रते। बंदे त्रिज्य रूपायस्थे सर्वारंभे प्रसिष्यित १४ । स्वांती दुर्वा विक्ता पर्ने प्रति न्वरें समें ने स्विर तां भवेदेतं। या स्वश्रवीवास तातुराने विकास स्रिट्टिक र्रियम् मेरिया प्रशास्त्राति हार्सन्तर प्रियमेन स्रियं र वेद्रमाये मारिति अनराप्त धातभेनााः उत्ति मासीवः ब्रोवेष्ययमिम् लाभेनिशेषाविचेषातिवेषाति शासेमिते।।४५।से गिर्गिको नेपा स्वादिष्ट्रेशन स्वादिष्ट्रेण कार्य प्राप्त प्राप्त है। रिक्त हरिंग स्केर्दि ने ने ने ने की प्रा अवद्रोगिन नस्यम् स्राधिकारिकारिका ने दृरीका वाप्रमें ने किया स्राधिका रे कार के भोति । ध्रोगिन स्थार राज्य में कार्य में के व्यापिका निकार के दिन के दिन हैं के प्राधिक । अद्राधिका में स्थार के स्था के स्थार के स्थार के स्थार के स्थार के स्थार के स्थार के स्था के स्थार के स्था आह्महणाब्द्याकाष्ट्रणहणक्त्रीकरणे CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

स्रतिमाश्विकाति। जुग्न ३ क्षेत्रेत्राण्यिनाको दिविस्तिने वे ३६॥ नवान्त्रेत्रा हरितामर धना से ने वेसत्तरोष्ट्रभे विसंतर्विष्वितिमध्ये वोष्ट्रितिमान्। देशवास्त्रभवास्त्रभविषारवेस्विवि देशवास्त्र अविभाग्यामान्य मार्कि हिने नोका छ र ने सत्ते मुना माना दी भरती है विष्टिती घरतेने। जुल्वे भ मुझे हमे मुद्दे सिद्धिवीराभि बार्यो। १९। जे सारिति प्रत्यमधानि सम्गृष्ट्ने मद विश्व स्थिति नियो बरत ने विकवी र बारे । स्माने र जा बिरित तथ जनस्परा स्ति ने वि इ र पर कर प्रोरं बला र बरो में बेश के इको से । इस दुर्फ ब शियबरे क्रें गुरों बार से । लान क ३ क ३ ए ३ में विक्षों तजीव वर्गस्य किल्य विद्यां त्रशस्य में ४१ स्टोज्य सिजभागेषुको दूष्ता वे ३ मे ३ ए ३ ए जो ते तिले हुरो एक द ए तमे सो साम बादे संधा ने कि प्यते ४२। न्याप श्रामिता तार प्रीत्र क्यान्य क

अद्वादिता भागी नहा त्र प्रकारणा अष्य संक्रोतित्र करणा शिरा के संक्रमणा मुगरवोदि इत्र प्रां क्षी विक्रोल द्विधी व के ते वरे वा बोरा क्षेत्रे दर प्रता न प्रतीन को बेमरा किसी स्वित्र ग्रे मुख्ये हैं वे होता विक्रों के विश्व संभगी ने प्रक्रं ये विश्वा ती साम के ते से त्र सुखा विश्व स्व त्र स्वित्र अपने दिन स्थान प्रती न प्रमे निहंति मध्ये दिन स्पि विशेष प्रते वस्त्र राज्य श णुश्तानावाञ्यवगार्गप्य निर्माण निर्मा CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गर्वेष्ण्यादीत्वकेर भवनेवाः भवकः १॥ राष्ट्राप्तिक्राप्तिकाप विद्वमं १५३ मोतिकाप विद्वमं १५३ मात्रकाप विद्वमं १५३ मोतिकाप विद्वमं १५३ मेतिकाप विद्व प्रतिष्टा। अलावायारा ममुरप्रतिष्टा सिष्याय नेजीवशारा के प्र के हिसे मह सिप्रवर प्रवे स्थार्थ है सिते स्व इति चिहारों जासरी हितारव में दिव से तिशास्त्रा शारा के पाये नित्र अ जाता हसंखे । अहणे हा साथ हो सात्व वहें मि गोर् प हा विश्व हें । को युवं तो विश्व : हा शिवो न प स्थि है हि ते ने विश्व हो के ही से से से से से से सियर है शिपाट !)। पुष्पेमहा वि सिय हो सिर्फ ता हे वो सिय बरागे ने से सी है। । इति यह विज्ञानं तमत हे बन्न राम विर विते

स्या हिकान जिपने तापशास्त्र शिक्ष के क्यरें के का हो सहने प्रिया बाग से अपी के। अर्जे व्यधितमा होतपस्मामा विकारव अने व्यक्तिमा विकार विकार में विकार के विकार में विकार के देरितीयं जननी ततीयाध्य नंवन्धींस्पुर्भे खणात्मं सर्वन्नस्यारं दिधीवलोसंपथ गंशनेद्भम्तलगतपरिष्ठवाद्यातगंशवनेस्योतिस्तिपातवेधितिस्तिन्तिं CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कार्याः

अगुल्यहों हुगुलहाई महाकारे। अन्यान कि महर्म र भारा प्रमहने १ महाना हाश तीहणोग्रने पो है बाहणाने त्रिष्ठ छा रहिने त्र काश्विमाने पा स्वे हा त्रित स्वपात परि हो है बेन्य प्रकाल में भारत बेश तया शबंगति हो ते ही तो वप हो सिते। ४८। हान्या गार्थ प्र

। धीर्दि है का निल सो व्यया करे कु पहाने श हो ब करे हि तो १६ तमे खुगा चिता १४ व वर्षे देते। भित्र भवास्त्र के ४० मालेंग का गां ५६ देवं ना दिकां होता ४ वर्स गरी तीयर सी भूगों बाह्म वि स्मेशना बी शरी वी बिद्धां पा विवेधि वाचिकर म्रतिष्मात्रास्कात्यात्र रवने प्रभोविवातः विकामारातिति स्वीकार विकास साहि एक्पितितित्व विन्र CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

करः यहः एकाधिय सेशामीशमें बेबानेबहोबहात ४३ मीनो १२ हो उककी ४लि मागा ने न्हार्महि ह इह

विः नोगातानां बहो जो नहा ने बरेपाद भेदे सुभं स्वात् ३५ कुत सुक्र सो ज्यानि स्ववंदताः विक्रियो स्विवंदताः कि कि से मान स्वादा कि स्वादा शानिम्हत्र न अस्य बागा भ बोला ७ ए ८ यं व भ विश्विरवाः भ समतापि मध्ये चियां का को विष्म भेविषरीनमस्पद्रकालकाः प्रथमपंजनवाधिदानां ३८ स्पाइत्शामाद्रहराणिनएवगहेती रायह्झ नवनाराक स्त्या ३ भागः जिंदारे या अविने कचितान्य वर्णाः सोने या अवि तिवाष्ट्रभनेवषापे ३४ मेह्नपोस्रभनापभागे छिरिकायुग्ने व मेलामिनीपि आहोछारे कार्यं विगारितेवत्र त्रगंत्रातकं केकी ४ ल्पेट ३ ता २ भंगति हिंदिकं सिंहा पर्यं विषा। २६

जोराप दिहिंद्वोनिधनितंद्वोहमानसोख्यकते ३ जोहे दुष्ट्रभक्टके परिणयस्तिको धिपलेक्योक्षित्रविद्यादेषितिहत्तेना उत्सिन्द्विति अन्यसंग्रेष्ट्रो सहस्राविषयेना उत्स अद्दोत्तयातामुद्रिवसीप्राक्तिवरातानावितिहत्ती दुवी देश में भाराक्ति स्वानितिह पानायहै दुसापित्या द्रमानां नहोजः खेजरित्वंनां रायेन्स इकू रेखर मीति द्वापि दृष्टं भक् रे ३२ ज्येष्टा धिसोगनीराष्ट्रियम् अगुगर्हार्स्यके नाडी उच्चेड त्वाष्ट्रियो सकत्वमुस्ताने विति दुर्भिय महमा वाष्ट्रिकालिकालिका दुर्गमणोप्ति । भाषापरास्मा हुं ग्रेसेशका ग्रांपरिगायसम्बद्धाः वार्याहिस्तः १३ अकवरत्र पण्याव गांश्विगेशामातीर सिद्धाः स्वत्वम्गावीनां निज्ञपे क्सेबेरिगामहो ३४ शक्षेक्ते वेदिनामहोद्देशो स्वान्त्रहा वेद्यो हा प्राप्ते नथेव नाडीहो। CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

णियां। दुनेमण्यानः युक्तं क्रीये विश्वो लोम्ब्यास्य समे विधे प्रथा मिनेन वास्पदिव त भेणाचास्पत्माः कुलस्म मुद्द दुर्ध देलामण्यां युधः शतुः युक्तण नीम मो वणणभः तस् नोः तिन हस्करो १६ दिने वास्यित्यः शयीगृह्यानिस्मा नाः शमागीव्यतिक्राण्यकं युक्ते नेद्रवे युधिनो शत्रामाः सर्वतः वित्रेक्षामयानीकावेः शिषाद्वीशत्र के तेले समीपित्रेष्ठक व्योशनेट विकाणिस्माकाद्विकात्मः समः वे रसोनरामराणाः कनतो मधाविनेदेन्तलव कणानलि तर्याः हवेतरात्रणविधीणयमस्त्रोविषेत्रादितीद्वरिषोत्तात्रति वर निजनि तर्याः हवेतरात्रणविधीणयमस्त्रोविषेत्रातिद्वर्गात्रणि निजनि वर निजनि त्रातान्यविभीतिदेत्रतमस्याद्वर्मन्त्रत्योः सामध्यमासप्रदिष्टा अतुरम्नुत्वोद्येत्रतः विवयदिष्टोर्नुतिविष्णवीः स्याद्वरमेकं तर्तीत्र २८ मतः एदाष्ट्रकेत्रेयोपत्यहानिनिवात्म २५ CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भ्यनाजी होते गुणाधिकाः २ दिनाम् कालिक की वलाने नेपाधिकों जिनाः तिश्वावध्यतिशास्मतेवधीः २१ हित्वाम्गेदं रशिवामाः सर्वेतचेणातिनास्त्रभस्याः ीरिंहस्पवरेशिवनालिक्ने पंनराशो अवहारती अत २१ कत्प सी इरमें या वत्के मा मंबर भारी गायेंन्स्विशिक्षेत्री३ष्ठाभिर्वा अस्तिस्ति ३३ अस्तिसंब्रेयोतिगिरितः स्कर्भन योः कासरो विता जो जिसयो हिरिः समृदि तो व्यान्यो त्या वो कं जरः ने पोर्वे व प्रेगिरे ता नाल भयो

ि गोरादादु ने दां मोन्यं से ह बो:स्मा हिवाहः १४ नुतपरिसाया त्यामासातः सुताकर्या उनर वनिज्ञकरोत्रहें श्रेष्ठनारेषिष्ठे उने नवस्ति को हिंगिना जी स्तरहरके व के बर्दिन मित्रो रिर्देशमेनित्रहाया १५ वद्याबर्गः भिराजीतिष्ठा जेनायां ज तेल्क यनिय योतरं मानोजी रंतत्रविवाहत्रव्यतेशात्यायानान्तत्वित्रियारेः। ह स्वात्रतेत्रविवाहतोत्रनाद्याव नेष्टाप्रतान्त्रयात्रे वध्य प्रवेशाव्य तात्वात्रात्रः शामासत्रोदा द्विभेदतः प्रथः १७ स्वय विनाशमितिजी नृतरं विधनः कं न्यामृती निर्मितिजी स्तर्रहरत्यः हो हाभ जातत्वया स्थायात्र मंबदाद्या मित्रा अवति हेबर नापा वासी १९ दीपा राषा हे बर स्पनुभा बद्धाः स्लोनापा इसपीहः पार जाते हायोः युने १६ वर्गोबयपैर तथातारा ३ कोति ४ श्राण होने न के प गरा में नेंद्भक्र

त् वायसावारवरं ववा क्यानीविवाप्रसालग्रस्य रित्न विद्यालग्रस्य ने असमे ने विद्यालग्रस्य के असमे ने विद्यालग्रस्य के स्थालक राहिस में ते करा के से मा व्यादी स्था रे ने का काराहिस में से काराहिस से कार निवस्त्रयहोषजीतादिनाद्वायप्रेतिहित्त्वी अवैशावरेत् १० गुरुषुद्विशोगं केयकानासम अविष्णात्रहें निष्णात्र विष्णिद्र विषणि अविष्णात्र भागित्र विष्णात्र । विष्ण अविष्णात्र विष्णात्र । विष्ण अविष्णात्र विष्णात्र विषणात्र विष्णात्र विष्णात्र

उहाँ विः परितायनकरोगानुलाककरा स्वांस्थान्य स्वस्थल में स्वयं लेकित तिर्देशान् विकार करोगानुलाककरा स्वांस्थान्य स्वयं स्वयं ति विकार करोगानुलाककरा स्वांस्थान्य स्वयं स् क्तपद्दीतन्द्रातः समराशिमा शर्वाकः अधुभरवबर्बीशिमोहिद्देशेर भवति विवादिविवादिवादिवा कीय ह अहाल कहाती याहका पत्य कुछ छा का भिनी ते बेहें बतात के सकती से ते वातं हो परिते के सकती से ते हो लेख ने विशेष के से किया है के स्वार्थ के से किया है के स्वार्थ के से किया है क



दिसरिन्नला विषेशिकर भेत्रमणादितीत्रेषे क्रीवेषवाणिवस्तु व्यवस्ति रोहरोगक तिम्गान्य लाक्षेत्रधनादितोसत् ५६ नोदीयादोन्तरं मातः १ व्येलजां मरेनादि गांत्यवोनं जते पाति गरः। कार्विक्रयानसत् ६० स्तियीतुः जतवंधः अयक्षात्वा वंधनसम्मन्त्रतेनकेशांनाः विवेशवृत्तना साराबभोमालीविन्तिमते अधिकाबंधानंबास्त्रेन्यागोत्राविकाहतः ह। केगानंजोउनेवलेकोत्ते सारिवारेयमं ब्रतोक्तिर्वसारेदिसमान्तिनिम्नाने हर नेतिवीकः संस्कारमः अवविवारम्ब रहा भावित्रवर्गकर्तायमं लक्तायालेयमं लक्तायालेयमं नामिन्यमं नामिन्य

वि । अमान । ११ विद्यानिरतः मुभरापित्र वेषावापागतिहरू दिवनरः अवेस्वालकेव हुः विद्यतः त वीकेंद्रेसर्यादिखेवरे। ५३ उके मीवेत्वा वंद्रेस् विभेगा हिम्बुते निर्माण क्रिकेट निर्द्याः सद्यतेषुरः ४४ विद्यमिनंषाने सिनेविद्योगाने गुरीताने समस्वेरविद्वतीय मंशानि हिंताः ५५ मुवियुक्र मे ज्ञानिष्माहि। ग्रिशिय हरूगार्क १३ संस्थिति ति विश्व तादिनितवाष्ट्रसन्से समानिष्ठानध्यायाः ५६ अर्का ३ तर्क दिन्न विष्ठ प्रदेश स्यानदिन में राज्य १३ ईसाई प्रहारणमा मध्ये स्थिते क्रजात ५७ अन्यस्तो इन पाका रूत विकास तरं यदि वेत उत्यातान क्ष्यकोत्यका यिपा ति हर्वके तस्यात पर बेर्ड क्रण हिणिया २२

वयाद इपादिचाता दिस व्रम्यादि दिन वयं चतुं ची चेका गंत्री का जा जा का वति गला

ध्यस्ति १४ वित्राधिको भागित्र को के हान सामा को जद्यीको विकाल स्वाता निवान कारता निवान के जाते के कि को के कि की कारता के कारता के कि की बात के के के कि की बात की कि कार अतेन ४६ जनाई मासलग्यादो द्वतिद्याधिको नती आध्यानीपिति याणा समादीनाम नारिने ४७ देवोहेलाने स्वेत्रेत्रेवा खंदोव गोति हेगुरः रिण्या १६९१ तुर्व गोर पीकृती वारि ल्याः युभोज्यसात् ४० बहुकं त्याजन्यराक्षेत्रिक्केशाविहुक्षाः येहोनुसः स्वाः पद्दभार् म्रुद्रतान्द्रजितिः ४८ स्ट्रिअहोषेशस्त्राधेशतीनिरिवरःद्रने आव्संस्वागितिने ने लेख नवंद्यागलयहे पः म्रुशेनुजोभवेत्यापीणुः पद्ममहादुः यज्ञार्थभात्रणे व जीमार्थशतनी

लखुश्रवानिलांत्यमादितीयात्वामित्रमेनवेगेनयत्नेविशालिपिगाहः सतादिन

विकामाय पंच मे सिति पुतां पहे तथे बहुदशे वेश्या ना पुत्र दश मे प्याप्त प्रमा हु दशे वा त्यारे के लेखिरातातिनिगरितेगोलेनपार्जुधाः ४। सिम्हालिकिन्सलम्राजिस्के रेडिके विद्वास सिने देने अतंसन दिश्यी १९ पर द्यारिन शिवारिन । अभिनेति को बहास देने विन न के परिन न न राहे ४३ कवीत्रानंदराग्रामारिनोहम्होत्त्रतेशमाः स्थितः द्वापानीत्रणातनीः मतीत्वति प्रतिपत्ताः ४३ असनेशेक्षण्यादिकाः विभागानाः मानाः विश्ववाद्येशस्वताः कर्कगोस्यः स्तिति

लोमेन क्रियामने दृष्ट्र ताहका ता हो या नीर या निह हते बसाः स्नोन्त्रीलारिनावरेन अहापत्यस्म् तेष्टेके जिल्लागिनेकाते ३३ इतिहारनरव क्षियाञ्चितिताचीलोदितेजारेभेपातंग्पारस्वीन्बिहाय नेजमे छस्त्रवसंख्यात्या दिस्तप विक्रांनिरासेनरामामामामामामामामामामामामामानेनिरामामामामामा कत्याणियी रतिबंधमोलातिहरकर्मबिक्ष त्रम्यान्याबरे त् याववाहतीर्थामनिधमा न्स्रमाबरेन्स्वनगर्भिणीयतिः अत्र स्पाणांदितं हो रामेश्व असि ते वे ब मे वे ब मे ले हरे षड्गिति वसे जो हत्कः पंजभविमो हतो स्त्र ४ विमा हो एहे का समिति वर् अषा हाराहे भा क्रोहि। विस्त्रमात्रमा अर्जावसम् के तिस्रोदिया १ कि १३ दिन् १ । दि ३ व द ६ मार पत्रिके १२वी

रहर्न-वि

इमेल्यास्तं १५ वाई त्वकेविका तित्रमणेयावही सांतद्ये॥ १६। परः पद्माइगोर्वात्सं विद्या वृंशा अवाईके वसाप्तवहिलं ने हेग्रोः पश्म हाहते वे तह्वा हुयोः ब्रोक्तेकेशिल्यून हिनपरे: अहं ३ लात्पविकेष्ण स्पेर इंदिन सहिविष्णे: ३० इंडानेपी सतीया त्याभवाति विजने हार्क ११ हिका छ। जहीव वी नाहे विवे के हरा जनसमये ते हम के उपकारी बारे ग्नांपायोग्रीष्ठानिधानतेनोनेधाने अद्विष्ठिता अतिवित्रिने ने द्वर नाम बेराया। ए इहिन्यप्राणेः वर होणा वंदक्त सेमेरियासकरे मेर सुरस्य मानियम् तान्याः सः इम्लि धजीवभागिः कें इतेश्र अभिष्टतारया ३० वं अमासाधिके माताविकी लेपियोर्जिसत वं वर्षाधिक स्पेष्टं गार्भिग्य अपिमा तरि । तारादे हो बे बिके गो व्याना हो देन तस्य से २०

क्रभेविह्नम्लाहितीयस्वातीयस्वभुवितिषिषुन्य यस्गाः वसह क्रमागोयसीनायलग्रे। सोमेः स्वेदिनिक्तित्वित्वातिस्वाति मन्त्राचानेना॥१३॥अपकर्तानेधः॥दिखेतान् क्षेत्रपोणवस्तरिभापनं तन्त्रमासंबदिकापुग्न इंज्ञानारामत् इम्ति। वसिः संमितेमास्प्यावा। जन्माता तस्प्रेमे १३। १६ परिमिति व सेद्रोत्ममुकेंद्रवारेचो नाहे विष्युग्मादितिम् दुलहरूपेः कर्ताहोधः त्रशासंभ द्वेमति दभ वने विक्रोणके द आयरे गुपरववरे क की ललाने वापारके रहि सह ला व्यान हे संस्थे ती तरसे जिह्मागुरोप्रभावहः स्पात्। २५॥अ युद्धोलं । तिविक्तां व प्रतिक्षपिक्तायहर नाधानगेह प्रवेशा धोलं राजाभिषेको लातमिषुभदं मेवयाम्पायनेस्पात्। नोवावालपासावा हो स्रगुर सितयो नैवकत

१ मयो तमेसर्म ने वो दे ति पि जारित्। १ अयरे ला निया मारो। होता हो दे दिना त्रेवप भरपवे ते ५ ७ पसाने अदेह तमा का मंद्र व्याद्धिः लोर ले इस सिक्षेत्रः। १ ४ १ ६ ता ३३ वे ३२ में १ १६६६ तो ति हि जिस तर बासरे स्माद्द ति अभे सद्द ला अप्रवाने : चित्र ने ॥ हो ला चित्र हिरिवि निया सांवित् प्रसाने मानो के समये की १ सितिहि वास्मात ॥ १ ११ अप जल हो । अवी उस से बे जा हो

तंद्रागिरियाः व्यानिकार्गिर्धार्मित्रेष्ठितेष्ठित्रेष्ठितेष्ठित्रेष्ठित्रेष्ठित्रेष्ठित्रेष्ठित्रेष्ठितेष्ठित्रेष्ठित्रेष्ठित्रेष्ठित्रेष्ठितेष्ठित्रेष्ठितेष्ठित्रेष्ठितेष्ठित्रेष्ठित्रेष्ठितेष्रितेष्ठितेष्रितेष्ठितेष्ठितेष्ठितेष्ठितेष्ठितेष्ठितेष्टितेष्ठितेष्यतिष्यतेष्यतेष्ठितेष्रितेष्ठितेष्ठितेष्ठितेष्यतिष्ठितेष्यतिष्यतेष्ठितेष्यति ए इतिबराहमित्र इनिक हो दिन हो दिने ति को अज्ञानि व व मा सिवालं व हा मुने दि करि सा माय ध्रियेदुसे ए ही में माला भेर परेपा होती। यह मालि का लेखा परे ता सुरा माली का लेखा है स्मिल वर्ग निर्म असे माने तथ कि असे आस्वाम के प्याप्त होते आहे होते आहे स्मिल वर्ग निर्म असे मानि स्मिल के स्मि CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नकेशसं के सम्योपरागिर बसान्यातंत्र या बेंधितं अविज्ञोः शाहिनं देन व परिद्याह वस्यपत्नीगम्भाम्सातहतानिम्सुभवने जनास्तिः पाप्नाभाभ द्रांशहं वर्वित्ताश संस्थे भारति क्षित्राधाराजी छ तहाः ॥ गर्भाराजे अतरे हुं ब मे न जाहण का ती विस्वतं । खोसत्। हा के दे विकालो कुम्रेश जाये समा द्वारा कि तो है हुं यह हु हु लग्ने। वो नावा के हुं विश्व युग्तराओ जित्रादिती त्या शिष्ठा स्थानेत त्या अस्ति ते वेस्वत जिल्हा ती विकास विकास कि स्थाने के ति के स्थान के ति के त्रेषसीमतीष्टमण्डमासिश्रभदेः के दिविकोगोरवते लीभागादिह वि ३ श्वाधिकां सम्देशनाने व्यवधानिकारा । सिता कुतेर ज्या ३ रवी ४ दे पत्रोवह वदात्रात्रात्रा । सन्य वद्र रहिनाक

वे. राः सः स्मार्गोविधोर्वलमुग्निविवार गर्भ संस्कार्यो रितरकर्मस्म सिर्वार गर्वीर ते: प्रस्वनेविधयंत्रासे ततीयेल्यविस् ह्वा ॥मासेरुक्षेविस् विधा ततीवेलिंग्येष्ट्रेम सुर गरहेव मुद्देश ।। अय जाने कर्म जाने कर्मराधि। त जाने की दिश्वा की विधियंप वी स्मिरी क्रीनियी स्मेड्रिश्कार्ये हार्यकेषियस्मेसर्फ्रविश्वस्ते उष्ट्यात्।।।।अयस्तिका नंगमेश्वर्कोर्करवात्रहेश्वरतात्रहेश्वरतिकानंसभित्रभरबीत्रक्तेष्ठेशस्त्रांभार्वात्रयथ्यातिभवां तक्तिस्म लाएं स्तीरिवस् प्रदृश्वि १२ दिलि तिएपं ॥१३॥अस्र समादि ता से इंतर स फले । मासे वेत्र स्त्र में भनेत्वर समोवाली वि सप्ये त्वायं हमा त्या मनुता १ ने ते स्व १ न मनि । स्त्र स्व स्त्र स्व स्त्र CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

श्मितिक

्यप्तितित्वविद्यहरणिभि हुद्यां अहोग्रहेश्विस्तृः वरेव समितासहण्हिणे विद्याः ५२ य व श्रान्यविद्यां सविभयतेन प्रपतियुत्ते अग्रेड्या विद्याः ग्रान्यस्त्र स्वर्यपति स्वद्यपति स्वद्यान्य स्वर्याः १ गृश्वित्तवसद्वर्याः स्वर्वे अववविद्यां व्यापाः ग्रान्यस्तितर्णाने यम् मुनः ५३ स्वर्णान्यस्त्रः विद्वाने स्वर्गते प्रपत्रे विद्यां विद्यां विद्याः स्वर्थः स्वद्धस्य स्वद्य स्वद्धस्य स्वत्य स्वद्धस्य स्वद्यस्य स्वद्धस्य स्वद्धस्य स्वत्यस्य स्वद्यस्य स्वद्धस्य स्वद्धस्य स्वद्धस्य स्वत्यस्य स्वत्यस्य स्वत्यस्य स्वत्यस्य स्वत्यस्य स्वत तस्य अक्रियकाणाः ७४ त्रवणतिष्ठभित्रवेवीस्यते गंतनेवाचार्यात्वाचनकरस्यस्य हुअंगात्वा यहे वेष्णुरसर्वमध्यमा वृद्धिकां स्त्रित्रों देतरसंक्रमें प्रीट्रं विके सुनित्रमंत्रभाक्रियां विधापरती तो तीव वर्व प्रिक्षित्र सत्ते देशः ५६ देव १६ द्रोश द्रोश्चर्ट महो हुए हो एट माद्रों काः १ स्वन पाः १६-क्रमात्

लग्स्बाभी।

लिया वंदावला नेपास्ताः लग्नेद्र कविग्तिष्ठिति निर्वाद मतो न्यों लग्नेद्र मुमाराख्य महे व्यव विग्नेद्र मान्य महे विग्नेद्र मान्य महे विग्नेद्र मान्य महिन मित्री मुनी हु विग्नेद्र प्राणा देशा गों हुं। सन् विग्नेद्र मित्री मान्य मित्री हुं मित्री हैं। सन् विग्नेद्र मित्री हैं विक्तं हैंगिर होजीवन त्य अहायन निविष्ठात्मप्त हर्णित व्यंधकणा विधरंग मुख्य खंदोणाः नपपतिविद्वहितिष्ठितं के दक्ते गोतह हैं पापविद्या मनविष्ठा मनविष्ठ मनविष्ठ । पर के दे के लाप तो तीव भी हो रवी वार्ताने वंदे वीपिव गति में वा सवेदी पांचारा मां योति वंदे ताभे तह है मुह

नेपारोजाः २७ विकोरो बेंद्रेबामहनरहिते रोजधातके रहेन्सी मा उक्ने हिंगुल मंपिल शंसरगरः भनेदाये । केरेका उत्तल वेशो खाद तरासम्बह हो का गारे दूरन उन ते लेश अधान होही त्रभावी पेवेही देवें सार् अयोग्री शमानहां के कारे सार्वे के का १ विकापका त्र चुक्र मित्रों इं ह्वासुर स्वें सन्जिति जापः स्या है पिते मनः शती एतहे ते संप्रतिभाग तांजिक स्तेषांन् स्वेशवरे हिवाहतः ६ क्षेप्रते सारिक ताकिष्वं वारेवतिन स्त्रेयरि क्यांकरपीड़ां संकीतांकांति दिन्ता पर्दन ताम भीति प्राप्ते साम बती दिन्ति तिरेखां के ४२ विधार्यलमनी संवादलमके उमें बादके महागानिक जागानिक विदे का मंडपान् ३१ CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वो भीनार ता उन्ने गिनि ह तो विवादे स्वाप्योग्निकी तो द्वार पुग्न र कर्ने दे प कांसा में स नितिषक्तरगानेवलग्रस्यवितानोवाकारोनवलविधिनिमिद्रतस्यवद्यी नेवायोगोन मतभवनं नेवयापित्रहोनो ग्राह्मले साम् निर्मितिहतां सर्वकार्व कुणाताः ६६ विजीनतिह महित्रे में ते ने स्थानिय समियोगोहिती सहणा क्रिन के क्रिक्न के ने ने अपने क्रिक्न के ने अपने हलाने के क्रिक्न के क्रिक्न

मार्जीच्यार मास्त्र

वेहींकं व्यानको सन् । मद्ने प्रसु त्रिक्षे में वोहुली में १६४ वस हु में बहें सीरमं इत नेपादिगर्के हिंदारापर अगतापण समेजना प्रमामारापणगतासाः पण मीसांपर खतकीः इः दरसाः हा दुतिकीः हा क्राप्ति हा पाष्टि हः नव पंच पर प्रक्रिः रर संक्रोतियात प्रस्ति हो व द विक कि के जे र प्र व अं की संक्रोंने मिलिं ही खणरह हताल खेतांका पर पर भे भे पर पर हैं है। है। है। है। ए गत्यः हिनायोन्येयातर्तस्यहभात्करा १०० तनीदिलंकाकांन्स्वनांन्स्वनांक्षां कामानां रामानां तमानां तनीवर्गादि साधने ११ अकीलमात्मायनाद्रीम्पर्की भीनिद्रित्ति स्वीर्वाति । भक्ताते केषि केषोत्रात्र सूर्यकातराकात्र तितराजात्र यानतः नाजापा स्यातरपाजाणाः CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by 30 Foundation USA

वद्वादयः वाणितनकः खिष्टः कालो सम्मनं यहाकी दान्नेः शेकोकी त्य ज द्वान्तिकाको ११३ अस्पातान्तिह वातह गरिति विभिद्द हाँ युयोगां साथा वंदे स्वीकानका ने वां समयने नि व्यः सयद्वीत्रयां गंदाते वंसविष्टिलंक महिनं तन्त्रेश पास्त्रेत यांतन्त्रेश शिवध तथां हि रिष्ट गोपापस्तवंगित्तका १ ४ सेंदु ज्रूरखणे द्वांकां कुरूबालां कुर्द्विजाक्यात्र्वार्सरदेशको गयोगसितंत्राभित्र लतान्यधं कालोपग्रहपापकारित्रकातिकार्ववारे स्थितं दृष्टे योगं मणाईयामद लिकाँ प्रान्नारहोजा नेवि १९४ क्रां क्रांति विमुक्तभं प्रहणामं क्र्रस्मांत अभं जेटो लात ने बंब हेतां लागं स्वेद्दीणा हिमिभं तथा तह विश्वहिभन्त पुद्वातभं सर्वाति। मानसं त्यते देहा हे अभक्त में सुंग्रहहता लाग्नस्व हो जानंवि। १९६ अपवध्य प्रवेशः समादि। हतंबिक तुहत्तभंसंध्याहितं भंतचा -

वं वा भवं र दिने विवाह है का त्रां मिति वा तराते अमं पर ता हिण मार मा मिति ते पव की स्परतीय वेष्टें १-७ क्रविदाय महाया न वसमान महानि वक्ष प्रवेश मनि शिक्ता राहिन हो परि: १-६ नो हे पति नो हमारा धिके पति है सी दिने भति रहे वक्ष हो थे सहसे सरस्य समुहं होयेत ने तातंत्रधी तातारहे विवाहतं १०६ अयदिरागमनं अरेहं बोर्तत व्येशतालिक्षणोरवे रवीत्रवृद्धियोगतः शुभग्रहस्थासरे ११ नवुग्नभीनकंस्यका तलारविश्वलाके हिराग्रामेलागुक्षकेवरेलिपेमदुद्धि ११ देसे सोर्थाभमरवर्षि दिस्पंद्र होसंन्यिति विश्वणिक्षिति स्वारा कालके द्वं जितिविष्यते नं वोराबेद्धमान जिल्ली लांक्सी ११२ नगर प्रवेशे विष्या ग्रुपद्वेक्स्पी उमेविविधीतीर्था अयोः २३

विस्पितिने नववर् अवेशने प्रतिभागीको भवति हो पहानीहै भार विने रहेने निवयप्र संभवस्तदां नंदोणं क्रातिष्ठक्रसंभवंः भग्वगिरोह्यस्विशः के उपपात्रीसां अरहाजस्ते। कुलेनचा ११४ इतिम्रीहे म विवादबस्य अवेश हिराग्य नानि अवाग्यामाधानं स्मर्दाने हो अविधित्तरमें दिनेशोदेश द्वाराश शारी शाम के ही रेमिस होने दिन सुनो के अधारी स भगोनभीनेनां लगतेनविनित्तेनवशानुगते । नोककनकमण क्रेमनबोणल्यनेनेने मनोरं विपारी त्यक ने जिका मों के इंहिंबर जिभवशेव परें मिलाभ जरूरवा स्थिते निध्न शिष्ठितिन्तिन र वार्षतीवे तनुरुवेवाने वे तोमेंवरे युने प्वर्वाये बेरवेंवास्पाता । तारिवेदनित्रक र अस्पाधानं रातिभवेद स्थानित्रक स्थानित स्थानित स्थानित्रक स्थानित स्थानित स्थानित स्थानित स्थानित स्थानित स्थानित स्थानित स

म्हर्प्तवादिभं शीरविद्ये वोषवे वेयमित्री पापे द्विष्ठां प्रश्नायगते व्यापे केद्रिक्रिया यात्रिक्षं स्थिते व पाचे ता नी हरू निध ने ति सति। सते पुनाति वे अयोदि दिर्त स्पारिते । असी ज्ञारपदी प्रसो प्रती एसर्वेष्ठ भंके इगते सुभगते । गतं लियको लोक निहानितं स्वेर शतांसरं महतेरात्मलहमा ततीबायमी सीरिसवेरिववधो पति छोड हिन्नीस्थिरास्यान्त्रपस्य ४ इतिग्रीहे नुद्रतिवि राजाभिजेकत्र अध्यानात्र यानापर पविदितत्रम्मनं नेषाणां रातवे दिवसम्बद्धत्मनां प्रक्षाधेतर्यनिमितम् ले रे

नमल्यानमा प्रातः।

भिश्वित्वा वारारतंथिदे वेदियो विजयावभने हुम्थापतेः लागभन्याधियोत्योत्तत्रां तत्र्वयो पेवयन्यविदेवते विवक्षे ध्रेने प्रमुभवर्गकत्तिनी देमला 'यग्रहेत्रहानयां ३ बहिए वितनी वस्फा हा विशेष्भवस्त यहि गृति द ,,भादरमञ्ज्ञाभाग्रहरू युत्तेचर त्राव देति ४ सविधा क्रमविलाने सीरिहरू वंद्रमिलमदन संस्थे तन्त्रों भारतदेषि दिवक पविधन होता। धना पंजीपियापेस षरिभवतिभगः प्रसक्ति सहानी । विकोगोक्नासि एके क्राजी वायर के विवानि मोकी लिए गीवा वलीको स्तमा को तयो विग्रते स्मात्स्व की वो दिशे प्रत्येत को नये हैं ह प्रक्षेत्रम्पिशितां तिरं विव्यानां वे क्रीभ्रमाहलयुक्तं त्यामाशां नयते सी ७ धनुमेविस

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

49

उद्गति वि

हेषुणाजा प्रशासापी निर्माणा ने स्वामित्र विमाल के माना सिर्मणी निर्माणी निर्मणी ने स्वाप्त निर्मणी नि

द्भुतंगमानां नाजी निर्णदां में ने सितां छ १ हर्वाई माग्नेयमधानिलानो वर्में वं वि विद्यमोत्तराई सान्धेसमले गमनादिके वं त्याती मही वीरी व सोमते १३ तमें मुक्तता शः स्रताविद्या १ संस्था मुक्ते हरिवपहो यत्तरही वकार्य तर स्रोत्य के तरी संत्र में के तरी सेत्र में के तरी सेत्र । प्रसंख्याचे द्वासनाम । प्रानित्रें म्त्रपहारिषकरकी है है कि म जित्र विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व । हि रा ११ ७ होत्रण यसहितपहाँ अभकरे यसाति जा कति या यो दे स्थिति मान्रवित्रयकरोतीं द्वोत्तयोत्ती वार्तो १५ स्वास्त्रतको दिवस ची इस्करां नुरार्धा दित्य प्रकारित मान्रवित्र मान्त्रवित्र मान्य स्थित मान्य स्थित महार्थिय के लाकु मान्त्री म्हा विद्या स्थित महार्थिय के लाकु मान्त्री म्हा विद्या स्थित महार्थिय के लाकु मान्त्री म्हा विद्या स्थित महार्थिय के लाकु मान्त्री महार्थिय कि साम्या स्थित महार्थिय के लाकु मान्त्री महार्थिय के साम्या महार्थिय कि साम्या साम्या

ेवि हिश्तिकः १६ सर्वा की उपमछोद्र कर्राद हमद्दीषोद्दे विज्ञां त्रावा स्क्रीते के ले से तक स्वी विद्या के स्वी के स्वा के स्वी के स्वा के स्व के स्वा के स्वा के स्वा के स्वा के स्वा के स्वा के स्व के स्वा के स्वा के स्वा के स्वा के स्व के स्वा के स्व क المعالم المعالم REL विज्ञानिक्तिविधियाणस्मानिमीतेंचितित्वार्यमानिने देविद्योगिमभेदिनकर्तितिष कारिसते १ धर्माभासारे वित्र मोहोशनी वित्र गेंधर्म में हो खितः शस्पते का समेंधर्म में सामगेंधर्म में सामगेंधर्म में सामगेंधर्म में सामगेंधर्म में सामगेंधर्म के सामगेंधर्म

不多

३। ४। प्रवाने की व्या है। फलेत अवस्में २० सो खें। के को अभिर्दे र व्या मध्य ४ म् न्ये। में विःखतां वृश्चित्रतां वं ४ इ.ब.चे तो १ दरवं विकाति वृं रेखे । स्तामां १ सीरवं वे मेगलां व

TABE

E lost

तलामं ४ २१ लाजे १दलाभियद्वां स्वीरली ४ मुक्तं भीति। लाजे २ वस्ते १ र क्या मान्य ४ ला मः १ करें १ द्वा लामो १ मुखं ४ वं करें १ में र जो र जा जो १ मुखं ४ २२ में र जो भागे १ स्वार्थ १ वर्ष के वर्ष के लाजे १ द्वाना पा १ स्वीर्थ के स्वार्थ के लाजे १ द्वाना पा १ स्वीर्थ के स्वार्थ के स्वार् ि वियति प्रश्नमाँ दे रवी मध्येध कहाति पूर्ण वरमेमतिः स्वात्स्या क्र चयेक प्रतिसी रव्य क्र यो निस्ते रह रवेनि र्जन के निमित्र क्रांणिता हो र गाः भित्र है लोगियास्पते जित्र प्रति माइन्द्रमाध्येत २५ मामा कथे सर्यभातिमा वित्राहित क्या दिन का स्ता प्रतिकारित का कार्य । अर्थे मामा प्रतिकार ने दे सर्यभाति दुम्माति प्रतिकार स्ता ३० दिवसम्प्रेषिमता इ CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वे सात्र के की रेमितस्य वहारे धनाधान्य देखात यह सारे करे तो समधीव म्ली की की ने क्रपादारित्रध्वपान्तिमित्रानलाहोतः संबद्धिक्षाहेस्पाद्वाप्ति नेतर्दे वह सर्वक्षाद्वापरे जिस्स्यफ्लं तस्त्रीति। क्रामिनोगेरक्ष्म नित्तिगत्ति। द्वारवात्र क्षीरकंभवेत देवस तुमार्भे दितिरिह्यते मध्यास्पिते वेद्रथमेः क्षीरका बका निद्रिती को कासिय पाहारे विशेष सभे र कोती कारवा दिश्वा मध्ये अतियो है- मु-बात्तुः मः अवगर प्रवेशः से सायने इत्रेपेस्प्याधवेषात्रानिरतोत्र्यतेनविगते **न्तर्वे** Es : हु। स्प्रमहु अबोर्स में बर्त लेखे विकास प्रमाण CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सारिभयां न्यं मार्गित्र मार्गित्र मार्गित्र मार्गित्र सवेष्ठनावर्षभारतिहित्वारणात्रे र महद्भवित्रवरेष्ठभत्तभेशासर्व बकारयेत विकोताक द्रायधनित्री! अवे निषष्ट नामो प्रातिय जेषके:

क्रिनिह महानिष्ठ

हितवेंद्रगतीच्यति दृष्ट्रोबस् बपलाभकारः खल्याः दृद् रिपुलग्नक ६७ तम्ते। परितिबः पाषायरि लाभेकार्राणीये वेदी तमाधिगानः स्वात यकी वंदोरिव के बार ने द्वार ने द्वार ने में में में में ने विवर्ष हर रिप्ट्न ने प्रमान धंभगुती नुयगेत स्थिती भर्मे अबनगर्धे द्रमा बांबेरगा वालिसता सित जीवओम बुधभानतन जा सानु । मन्सूषा ७ हि । विवस

क्रिति विः

和环

निर्वासर्वाचाः त्रमातिन्त्रपुत्रेन्तं शामाद्वसर्वे पर अद्येतवियदि सिर्विद्याः वालीद्वानेषि अनुधापतियदि यातिरिष्ठवादि नीवर्षिति हः तनी। शानिक नी रविद्यान में द्वा सम्हलते। विष्णामहरामें । जिलाभरियमेणभान तराचीगुरुत्राभगुतालपा वल य तां ६१ समहत्वते। विष्णामुहीमह्न ७ गते दिस दिस्ती हिन्क ४ गतीनुधसगुती महत्र ३ ग ताः खलरववराः इर बिद्वागुरु तानु गोमद्ने परि सक्तिरगोरविंश लगतः सित्रक णिता विषिक्र मी गति रिवस तमामिस तो सहजे ३ हर देशमुरी वालाशीन तनस्ये। वालरन ख्वम अ छोरिष्ठ हमबनस्थे हिमकरपुत्रः कर्माणि । त्रोतिः सुदृहि । सितंश्च हा हिमकिरणस्तो विवित्तेनो । त्रिहण पतिगुर्हि दि देस्पितः अयग्रहसहर्तारिधमियतो यदिवभव

किनेइनेग्री सारिर्छे पा जन्मेंद्राजां इसिंहिशकोषा रधातुष्ठे सार ने भनेनेप विहमािक्राविमार्वेद्दरिक्षापार्विशामाना स्वाः १३ पत्र वोगातिनिद्दरिक्षापतीनीम्हा रिषेभारेवानां वीरातानिषां का नेभवित्महर्ताहितरमनुजानां ५३ सहते रिविहिषां सभेषाणी तथागानिमंगली रिअगरे सितं सति प विवेद्धे ब्रार्भेग्रात्यीहरू ने स्क्राय त्यारी जा जाति वि गन्त्यः पर भाति इसी रिन्धित होते हिन्दि। ताने देव गते आवगते के का नुत्र यहाँ है नि ता रार ताराता स्माहेब पर्वा भागाता साहेब पर्वा भागाता स्माहेब पर्वा ताराता स्माहेब पर्वा साम स्माहेब पर्वा साम साहेब पर्वा साहेब पर्वा साम साहेब पर्वा साहेब पर्व साहेब पर्वा साहेब सा हिछनसंस्थे र्राजानिव लिनरेशां जेतांशक्त्रम्गातउर्वातिन पर विस्तातं शापिषु जाना ४०

एतेषु भावेषिक ताँदाललि हिला ४

देशा मधीकां: ऋतिः प्रहिष्टाः ४५ केंद्रे दिगद्यितावे रेव मीराः स्य नियारिक्सिनी ४६ प्राचारीतराणिलनी १ भगुसतीलाभ ११ असे १३ भसते केना स्थायतमा नवारक्षमः गरे सोरिसायासमि अइः या इर गराताने पिवन्ताः पाताल एगो गीय तिवित्रेरभातगरेर विलग्नभवना लालारिकाः कीतिताः ४७ दरोगत्वा विवित्वा दितीम छन्त्रयेदिसन भेने प्रस्थायकाने वास्थालान्त्रते अतिला ४० प्रस्थायहते नितत्रहाध लिस्वित्वा तेयां विवस्ति है वे वस्ति त्यु व्ये निज्ञ सीनि वे करा जो जित हमें तमते व नी सः ४६ अणः कालीविना प्रकिमोधालिः प्रशिक्षाविना विनोत्तरं निक्षीयः सन्या नेयासंविनाधितिरः । ४॰ केर्देक्षेणोसोस्परवेटा ज्ञाः स्वयानेपापा समीय वर्षे रहेष्ट्रां नेदः नेष्ट्रां लग्नां साहिरे प्रेपानिः

प्रहारी विश्व तर्रायाने नेपतेर्थनाषाः पर्पर् ३६ ज्ञातिलाग ज्ञानारापती अभयहो अवतालदातर्दे थे ष्रभागमः अर्थानीन लग्ने उते बातर्षा के बिलतामं बक्तिन वसी जायते ४० जन्मराष्ट्रित नुति ह मेथवास्वादिभाद्वि हिप्रभेतनस्थिते तम्तगांत्तद्धिपाय द्रांयवास्य गतिहिन्पतिस्ति। प्रदे था तम्ने वंदेवांपि वर्गातमस्येयात्रात्रोक्तां वो विमर्थिस्य दात्री केलोरा ने वातदेशे प्रक सीनोक्स यानंसर्विसिद्धि प्रदावि ४२ हिम्हान्भेलग्न गतेत्रशस्ताया जांचिहा जीनयक रिगा वा रातिंचिनाषोरिप्रतीभ्यंबद्धधांत्रणिर्वेद्धितिलोमलग्ने ४२ राषीः खनसम्येप्रभसंय तेथांवाः खारिभानिः धाननीषिर्वेद्धेणि संताः लग्नोषगः लगमने जयरेथि-५ पर रेप्नोविज्ञ यरोम्निभिः प्रदिष्टः ४५ सर्थः मितोक्तिमृतोष्टर्दः शानिः शकीन्त्रं यहः C-B Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भ्रमाहाधक दुर्भवने निध्ये अने भ्रमरवाल ऊंभक्यांशको सान्नो सर्वयायत्वते विध चातलक

तेत्र त्रीनिध नगर्यकार्यकार्योमहर्ने ७ अधोरिहिरोह तत्रीगृहंः अधवत्यं रीत्राहितभाने त्र त्राहित्या हित्र विदेशिष विद मीविजयां पुस्क में से दिक री का चिता घवण स्थान से मता पुस्त से नते लग में जयां न हिस्तरी ५३ अमेनिमितशक नोरंगि सुप्रशासी मानि लग्न वल में मधिया प्रयाति सि हिस्ति र्यं प्रनः मानुना हिमेपि वेमोनिम् दिगिधका न वर्गो विनेयान ५४ अमनंधन रेव माप्रतिष्टा करपी शेस्त्रवस्तिकां समाने न कर्गपिव मेर् कान विष्ठ हुनवणी न हिने

तुं सत्राजं ७५ मही जते रेक दिने प्रति विद्यां भवेतां गामना अवे दाकों भवर मुल नि रितियो नहात्रेजातयाजारेनेवक्यातिहाबन ७७ वहीक सिन्दिवसेस्तिपते द्विगित्रविशोले निद्विवार्थः सिथपात्रवेशकालोकयात्रिकालते अ अगिरेड लाईवतारतियानां न नांवित्रानें वितारिगीयां दलाइनित्रामामि हिगीपाँद्यालावि भामिपाली भिगाकते ७६ कलमार्का लिलतं इला निपतियामाणी शामनं दृष्टि लाउपहुण्य मंचेणमा मण्डतस्य तित्राचा तर्सायमम्बद्धा अपललमां विशाणतेषा आहिका सर वश्यायस्य मण्डाविजा उनान मासले हैं के हिस तिक गाधिक वणललेशा त्ये हैंवि ४३ वानावर्स ये हिंदी के कि हमा संश्र म्यामा स्वार पूरा रिक हरणरसंश्र मा बुद्ध ते कि हमा संश्र म्यामा स्वार CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

यंवा ८० गराहेरातरमाषिगामसारियात्रेतिगासिकाः सीमातर्भिप्रगंबीता विहोषमा नंत्रस्थानंस्माहितिकप्रयतिष्येभरदातिष्वंषात्राकार्याचिहित्रप्रतास्माहिषिक्षेत्रवीति १४ अभवानस्मादानक प्राव्यानद्वा । ज्यानद्वा । ज्यानावा वा वा हा । हिंदी है विकास स्वारा हा । वा वा निर्मा है । वा स्वारा निर्मा है । वा स्विनेवित्रात्रात्सीरं लामें पंवर ने के सही को इंतेलेवासरे सिन्न निश्च सामं यत्माद्रीय पालेनन्दने १२ पुरक्षा ग्रहितियदिनेत्रेलगुउँ प्रक्रमामानि विनिवर्तते सहला। क्योद्दित

ववमन्यगर्वतामातां १३ विहमास्य तृष्योगमासाहिन वृत्ति । व अस्यायां वृत्ते हो जो स्वायां वृत्ते हो जो स्वयां वृत्ते हो सारो ने भवान जीम ताना निषीने व हो जानायों वान्तयः स्वेद्वीदेवें की वर्गितानी केमोरेशरः शाकुने साउपस्थारितागर्रे त्योगर् स्थापिः ४५ वित्रासे अफलान्य रूपरिशिभीके द्रार्थ पद्मानरं ने प्या वांधान स्ता अस कल अहे क ने या मिले महाको क नमें हा सा कलम खंजातिमत्क सकारलोध्निविसतोल महासस्ताति विस्ति का नरां रह आहे गाँउ गाँउ नरां तबस्तरतको मीनात्रसिंहासनंशावंतिहनवर्जितं ध्रतमध्काषांत्रभोशेवनं भरहात्रम्

गामाधिताः नग्तां सक्तिनिक्तिकेशयिति तसेग इतथा तो अस्य क्षिप्रणाग्रहः सगिह द तिच्ये रियह इत्ते ६० का पाद्यीग्उत क्र पक्तिशवाक नाक र वेकलिव स्वारे स्वलं र तस्वला समरहिलानिधान्यानिव कार्यासेवसन्वेगहेंभरबोटलेतिहरू गार्थिशानि गर्दे उद्भाष रिर्देशिधविधिरहिणानहृष्ट्याने एई स्वीधानाहक म् करादिषापाका नाकी न मानर् नोषा होनिवलो कनं चकिष महातातिती सत्ययः न्छतात्मयप्रवेश समहनेष सिलां पाय ना ने पे हारा विध्येयात्रे दिताः शामनाः १०० वासागे के किलाप लीपातकी य करीरला चिंगला छ छ का श्रेष्टा पिवापुरुष संत्रिताः १९१ । छ करः विष्यकोशासः श्रीकडीवान युन युनानियार चामचित्र क्रिक्न पोतितिह सादयः। CC-0. Gurukul Kangri Üniversity Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

म्याविष्यं सिंग्नीहरलीहरणितः । तेरिकः सिंग्नीस्त्रकाः काक् रहति नंसद्द्रतेः सिप्रवरेः पुनर्गसः द्वी वेनलेदारुगाने त्योगे ह्यी गिष्ठप्रात्मविनापानं का मान मासितिषिकालवा सरोइव मलसम्द्रविधातद्विक्तपाः भगवत्र तिहिण रब्दं उक्तस्वत जाराको बमिप बोत्सवादिकं ह मत्तेपही हिस्तु ४। ९। ९४ रिवाद तक है संख्यका लि ययश्च सो रिराविभेषवास्राः अपिवामर ए गविधान्यां उलावस्य वकाभितिर्था

वेधो स्मासमितं स्मिनितो जीवन नुराधाः

भागतीं प्रितित्र संयात् पर विविधियाकिकर महाविश्व स्थात्ये महत्ववरे संयोविश्व होत दिविभवार्यहरूतीहर्तेतालाभाइयोः लातीवाहणयोभवितिकाति।हित्यात्तविकात्वी रवेटेन जगते तरीय वरणार छो। का ततीयह कोः ५३ शाके ज्येनातभा दित्वे जाले शिवेता सार्वे स्थ अमुद्दीकोलेश हां मुनेहयभगे सार्यानुराधेतया हस्तोकातिमभेविधाते विधिभेन्नाता त द्यानां प्रीयाममधे हेवान हरिभेविदे दि ७ देविमियः ५४ तहाती करिद्वानिक अक्ता हिकानिव्य स्का बंदेशामुकानिम्य द्वारिश प्रवहति १४ द्वरा द हार्गेट्ट सिको खटल्य से विकारित द्वारा प्रविद्या से कार्य कार्य से कार

एकार्यसामास्त्रितित्वमेत्रीयः शक्तिविद्विष्ठमर्तनीक

विवास्यो पनी १ मा २ स्तो १ - तो निर्फ जिले १ किन्या होती । देक पन ४लिए काषर पाने ३ तज्ञां जो मंचं इभानी तित से मो ते सा म्नेतिष्ठभंभगतितत् ५८ व्याचात्रशंडव्यतिषात्रस्वम्स्याद् बज्रेपरिका निराउँ योगेवि सरे त्यांभि निस्त मेन खान्तरमंकी दिजमेशायन देन पर शहापहराहेक १ शहाप जाती जिहास अ अ । प्र में भे प्रमानिताः भ्रमानदेशक्रिकाने हः पातोपग्रेत सत्ता प्रनित्ति शिक्षित्र विष्या वार्षित्र प्रोप्टिमिस्ता शिक्षाः स्पार्दे शामनः ह। पाक्रा । यह

ष्ट हाशासंस्थित हो देश मंत्रालिंश को सप्ति बापिका का केई वे विवानिक रोजायनिष्टाः च द्रिमियुदि मुण्यात्रात्र्ण अयारत्यः यद्वेद्वारकरिन्तिष काकि रावलवनयोद्धतिह बहतीयस्पाधिकाः सींचेहाश्रहारहिनवैश्वसद नपरासीन तिः १ गोशितं पन्नः। मिषुत्र इनिवसेन्समध्येयामस्य हर्वक कर्मोतिन हर्षा । रानादेश हिताहितियो १५३ स्पोतितेष्टायहते दन्तोः अस्त्रिने १० यापि वृत्तिय साम्स्पायिने १६ मेण मितोहिपिनः ३ स्विष्टायन संज्ञाबायरी ध्यहत्यण हिस्सिति विस्तिह व रीर्घता

।रवरेभधांदाकाः पिंडे र हा ए दो जिते ४ धनादिकाः सर्व गलंडः रिविकः नेम संरवर्धः ५ RE CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA